بسم الله والحمد لله والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله واصحابه

..... أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝ [الرعد : آيت 28]

तर्जुमा : खूब समझ लो! अल्लाह ﷻ के ज़िक्र में ही दिलों का सुकून है.

सहीह हदीस: जो बंदा अपने रब का ज़िक्र करता है वो गोया की जिंदा की मिसल है और जो बंदा अपने रब का ज़िक्र नहीं करता वो मुर्दा की मिसल है.

[بُخاری: 6407، مُسلم: 1823]

सहीह हदीसी कुदसी : मैं अपने बन्दे ही के साथ होता हूँ जब वो मेरा ज़िक्र करता है और उसके होंठ ज़िक्र की वजह से हरकत करते है.

[سُنن ابنِ ماجه: 3792]

फर्ज़ नमाज़ के बाद सुन्नत अज़कार

मुर्शिदी कामिल, इमाम उल अंबियां ﷺ की सहीह अहादीस से

तमाम अहादीस के नम्बर्स उलेमाएं हरमैन और बैरुत के इंटरनेशनल नंबरिंग के मुताबिक है

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝ [ق : 40]

तर्जुमा: और रात में उसकी तस्बीह करो, और नमाज़ों के बाद भी (ज़िक्र किया करो).

सहीह हदीस: बंदा जब नमाज़ पढ़ कर उसी जगह पर बैठा रहता है तो फरिश्ते उस के लिए दुआएँ करते हैं :ऐ अल्लाह इस पर रहम फरमा, अल्लाह इसे बक्श दे, और ये दुआएं जारी रहती है जब तक उसका वुज़ू बाकी रहता है.

[بُخاری: 647، مُسلم: 1506]

1 सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷛ बयान करते है :
मैं रसूलल्लाह ﷺ की फ़र्ज़ नमाज़ का मुकम्मल होना तकबीर की बुलंद आवाज़ से पहचानता था.

(1 मर्तबा बुलंद आवाज़ से)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ﴿अल्लाह सब से बड़ा है﴾ [بُخاری : 842 ، مُسلم : 1316]

2 सय्यिदना सोबान ﷛ बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ नमाज़ के बाद ये कलिमात पढ़ा करते:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ ﴿मैं बक्शीश माँगता हूँ अल्लाह से﴾ (3 मर्तबा)

(इसके फ़ौरन बाद 1 मर्तबा) : اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ

تَبَارَكْتَ يَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ [مُسلم : 1334]

﴿ऐ अल्लाह ! तू सलामती वाला है और तुझसे सलामती है, तू बाबर्कत है, ऐ बुज़ुर्गी और इज्ज़त वाले﴾

3 सय्यिदना अबू उमामा ﷛ बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जो बंदा हर नमाज़ के बाद आयातुल कुर्सी (سُورۃُالبقرۃ : آیت255) पढ़ ले वो मरते ही जन्नत में दाखिल होगा.

﴿मुकम्मल आयात मुबारक और उसका तर्जुमा कुरान पाक से देख कर याद कर लें﴾

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ...... الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝

(1 मर्तबा) [السُنن الكُبریٰ لِلنسائی : 9928]

4 सय्यिदना बराअ बिन आज़ब ﷛ बयान करते है : हम रसूलल्लाह ﷺ के पीछें नमाज़ में दायें तरफ़ खड़े होते ताकी सलाम के बाद आपका मुबारक चेहरा

हमारी तरफ़ हो,फिर सलाम के बाद आप ﷺ को ये दुआ पढ़ते हुए सुना: (1 मर्तबा)

[مُسلم : 1642]

رَبِّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ

ऐ रब! बचा मुझे अपने अज़ाब से , जिस दिन तू उठाएगा अपने बन्दों को

5 सय्यिदना मआज़ बिन जबल رضي الله عنه बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ ने मुझे वसीयत फरमाई : ऐ मआज़ ! हर नमाज़ के आखिर में ये कलिमात पढ़ना कभी न छोड़ना: (1 मर्तबा)

رَبِّ اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

ऐ रब ! मदद फरमा मेरी की मैं तेरा ज़िक्र करता रहूँ, और तेरा शुक्र अदा करता रहूँ, और अच्छे तरीके से तेरी इबादत करता रहूँ

[سُنن ابی داؤد : 1522، سُنن نسائی : 1303]

6 सय्यिदना अनस رضي الله عنه बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ अक्सर यही दुआ किया करते:

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

[بُخاری : 6389، مُسلم : 6840] (1 मर्तबा)

ऐ रब हमारे ! हमें दुनिया और आखिरत में भलाई दे और बचा हमें आग के अज़ाब से

7 सय्यिदना सअद बिन अबी वकास رضي الله عنه बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ हर नमाज़ के बाद इन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह हासिल किया करते थे . (1 मर्तबा)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ

وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُرَدَّ اِلٰى اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ

فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ [بُخاری: 2822]

﴾ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह में आता हूँ बुझदिली से, और मैं तेरी पनाह में आता हूँ कंजूसी से, और मैं तेरी पनाह में आता हूँ के बुढ़ापे की निकम्मी उमर तक पहुच जाऊं, और मैं तेरी पनाह में आता हूँ दुनिया के फितने से, और मैं तेरी पनाह में आता हूँ क़ब्र के अज़ाब से﴿

8 सय्यिदना अली बिन अबी तालिब رضی اللہ عنہ बयान करते है: रसूलल्लाह ﷺ जब नमाज़ का सलाम फेरते तो इन कलिमात के ज़रिए अल्लाह से दुआ मांगते थे: (1 मर्तबा)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ [مُسلم: 1813]

﴾ऐ अल्लाह ! बक्श दे मेरे पहले वाले गुनाह, और बाद वाले गुनाह, और जो मैंने छुप कर किये, और जो मैंने एलानिया किये, और जो मैंने ज़्यादती की, और वो जिसे तू ज़्यादा जानता है मुझसे, तू ही आगे करने वाला है (नेकी में) तू ही पीछें करने वाला है, नहीं है कोई माबूद मगर तू﴿

9 सय्यिदना मुग़ीरह बिन शुउबह رضی اللہ عنہ बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ जब नमाज़ का सलाम फेरते तो ये कलिमात तीन दफ़ा पढ़ा करते थे: (3 मर्तबा) [بُخاری: 6473]

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

﴾तर्जुमा अगली दुआ में देख ले﴿

10 सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ﷺ बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ जब नमाज़ का सलाम फेरते तो बुलंद आवाज़ से ये कलिमात पढ़ते थे. (1 मर्तबा)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَآءُ الْحَسَنُ ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ

[مُسلم : 1343]

नहीं है कोई माबूद मगर अल्लाह, वो अकेला हैं,नहीं है कोई शरीक़ उसका, उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ़े है, और वो हर शेह पर पूरी कुदरत रखता है नहीं है (गुनाह से बचने की) हिम्मत और नहीं है (नेकी करने की) ताकत मगर अल्लाह की तौफीक से, नहीं कोई माबूद मगर अल्लाह और नहीं हम इबादत करते मगर उसी की,उसी की नेमतें है, और उसी का फ़ज़ल है और उसी के लिए है अच्छी तारीफ, नहीं कोई माबूद मगर अल्लाह,खालिस उसी की हम बंदगी करते हैं ख्वा कितना ही बुरा समझें कुफ्फार (हमारी इस फ़र्माबदारी को)

11 सय्यिदना मुग़ीरह बिन शुउबह ﷺ बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ जब नमाज़ का सलाम फेरते तो ये कलिमात पढ़ते थे :

[بُخارى :844 ، مُسلم : 1342] (1 मर्तबा)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ، اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ

وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

﴾नहीं कोई मअबूद मगर अल्लाह, वो अकेला है नहीं कोई शरीक उसका, उसकी बादशाही है, और उसी के लिए सब तारीफ़े हैं, और वो हर शेह पर पूरी कुदरत रखता है,ऐ अल्लाह! नहीं कोई रोक सकता जो तू अता फरमायें, और नहीं कोई दे सकता जो तू रोक ले, और नहीं फायदा दे सकती किसी साहिबे हैसिय्यत को तेरी हाँ उसकी हैसिय्यत﴿

12 सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا बयान करती है :रसूलल्लाह ﷺ जब किसी मजलिस में शरीक होते या नमाज़ पढ़ते तो आखिर में ये कलिमात पढ़ते थे. (1 मर्तबा)

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ

أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ [سُنن نسائی: 1344، ترمذی: 3433]

﴾पाक़ है तू ऐ अल्लाह, और तेरी तारीफ के साथ, मैं गवाही देता हूँ के नहीं है कोई माबूद मगर तू ही, मैं तुझसे मगफिरत तलब करता हूँ, और तेरी तरफ़ तौबह करते हुए रुज़ू करता हूँ﴿

13 सय्यिदना उक्बह बिन आमिर رضی اللہ عنہ बयान करते है: रसूलल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया के मैं हर नमाज़ के बाद **मुअव्विज़ात**(यानि शैतान, जिन्नात,और जादू वगैरह के खिलाफ अल्लाह को पनाह देने वाली तीन सूरतों) को तिलावत किया करूँ (तीनों सूरतें 1 मर्तबा)

❁ قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ O... ❁ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ O...

❁ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ O... ﴾मुकम्मल सूरतें और तर्जुमा कुरान पाक़ से﴿

[جامع ترمذی: 2903، سُنن ابی داؤد: 1523]

14 सय्यिदना अबू हुरैराह رضی اللہ عنہ बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ ने

फ़रमाया के हर नमाज़ के बाद ये कलिमात कहने वाला कभी नाकाम और नामुराद नहीं रहता, और उसके तमाम गुनाह मुआफ कर दिए जाते हैं, ख्वा उसके गुनाह समुन्द्र के झाग के बराबर ही क्यों न हों.

سُبْحَانَ اللّٰهِ ۞ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۞ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۞ (तीनों 33 मर्तबा)

(100 का अदद पूरा करने के लिए एक मर्तबा) : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

(या 100 के लिए एक मर्तबा) اَللّٰهُ اَكْبَرُ [بُخاری :843 ، مُسلم : 1349،1352]

15 सय्यिदना अब्दुर्रेहमान बिन ग़न्म ﷺ बयां करते हैं रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो बंदा **नमाज़ ए मग़रिब और नमाज़ ए फज्र के बाद तशाहुद की हालत में गुफ्तुगू (बात करने) करने से पहले** ये कलिमात पढ़ ले तो उसे 10 ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है और तमाम दिन और पूरी रात में हर खतरनाक चीज़ और शैतान के खिलाफ उसका बचाव हो जाता है (10 मर्तबा)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

[جامع ترمذی : 3474 ، مُسندِ احمد : 18019 ، 227/4]

16 सय्यिदना अबु हारिस ﷺ बयान करते है : रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो बंदा **नमाज़ ए मग़रिब के बाद गुफ्तुगू (बात करने) करने से पहले** ये कलिमात पढ़ ले और अगर उसी रात फौत हो जाए तो दोज़ख की आग से आज़ाद होगा, अगर **नमाज़ ए फज्र के बाद** ये कलिमात पढ़े और उसी दिन में फौत हो तो

[سُنن ابی داؤد : 5079] तो दोज़ख से आज़ाद होगा. (7 मर्तबा)

اَللّٰھُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ

ऐ अल्लाह बचा ले मुझे आग से

17 सय्यिदा उम्मे सलेमह رضی اللہ عنہا बयान करती है: जब रसूलल्लाह ﷺ **नमाज़ ए फज्र का सलाम फेरते** तो ये दुआ माँगा करते थे.

[سُنن ابنِ ماجہ :925] (1 मर्तबा)

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا طَیِّبًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا

ऐ अल्लाह मैं सवाल करता हूँ तुझसे मुफ़ीद इल्म का, और पाकीज़ा रिज्क का और अम्ल का जो मकबूल हो

18 सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन अब्ज़यइ رضی اللہ عنہ बयां करते हैं : जब रसूलल्लाह ﷺ नमाज़ ए वित्र का सलाम फेरते तो ये कलिमात पढ़ते

[سُنن نسائی : 1699] (3 मर्तबा)

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ

पाक है बादशाही निहायत ही मुक़द्दस

[سُنن دارقُطنی : 1679] : (और फिर 1 मर्तबा कहते) तीसरी मर्तबा आवाज़ को लम्बा और बुलंद करते

رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ

रब फरिश्तों का और जिब्राइल علیہ السلام का

19 **सहीह हदीस:** अल्लाह جل جلالہ की **"हम्द"** और उसके महबूब ﷺ पर **"दरुद शरीफ़"** पढ़ना, हमारी दुआओं की क़ुबुलियत का बेहतरीन ज़रिया है

[جامع ترمذی : 593] :

नोट: रसूलल्लाह ﷺ ने आयत दरुद (सुरहतुल अहज़ाब, आयत :56) के ज़वाब में नमाज़ वाला **दरुद-ए-इब्राहीमी** علیہ السلام तालीम फ़रमाया था

[بُخاری :4797 ، مُسلم : 908] :

[سُنن ابی داؤد : 1501] :क़यामत के दिन उंगलियाँ हमारे ज़िक्र की गवाही देंगी

नोट: सिर्फ दायें हाथ पर शुमार करने की सनद अम्श की तद्लीस की वजह से ज़ईफ़ है.

[سُنن ابی داؤد : 1500] :गुठलियों और तस्बीह वगैरह पर **इन्फिरादी** ज़िक्र करना भी साबित है.

الداعی الی الخیر : نوجوانانِ اہلسُنت ، قرآن وسنت ریسرچ اکیڈمی ® بالمقابل صدر تھانہ تحصیل روڈ جہلم
www.AhleSunnatPak.com e-mail: mirza_95@yahoo.com